Total No. of Questions - 3] [Total Pages : 4

(2022)

9262

M.A. Examination

HINDI

(आधुनिक हिन्दी उपन्यास)

Paper–XII (ii)

(Semester–III)

Time : Three Hours] [Max. Marks : Regular : 80 / Private : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

नोट : सभी प्रश्न कीजिए।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) यह कभी यह कहते थे, किसी भी मार्ग से जाओ, ईश्वर की प्राप्ति हो जाएगी। संसार के गले पर खाँडा चलाते जाओ और भगवान का नाम लेते जाओ, तो क्या इस मार्ग से भी मोक्ष मिल जाएगा? वर्ण-अवर्ण का भेद मानकर एक-दूसरे से घृणा करते रहो, अछूतों को मनुष्य न समझो, छुआछूत के नरक में रहते हुए भजन की माला डालते रहो तो क्या बैकुंठ प्राप्त हो जाएगा?

अथवा

'मेरे चिट्ठे में कमी करके उन दोनों कलाकारों का वेतन बाँध दो। राज्य है काहे के लिए? प्रजापालन, कला की रक्षा और बढ़ोत्तरी के ही लिए न? प्रजा और कला, दोनों के लिए हमें अपने प्राण दे देने के लिए तैयार रहना चाहिए। इन दोनों की रक्षा का ही तो दूसरा नाम धर्म का पालन है। कहाँ हैं आचार्य विजयजंगम?'

(ख) सच्चा दानी प्रसिद्धि का अभिलाषी नहीं होता। सूरदास को अपने त्याग और दान के महत्त्व का ज्ञान ही न था। शायद होता, तो स्वभाव में इतनी सरल दीनता न रहती, अपनी प्रशंसा कानों को मधुर लगती है। सभ्य दृष्टि में दान का यही सर्वोत्तम पुरस्कार है। सूरदास का दान पृथ्वी या आकाश का दान था, जिसे स्तुति या कीर्ति की चिंता नहीं होती।

अथवा

हाँ, इसलिए मुश्किल है कि जन-सम्मति से राज्य करने की जो व्यवस्था हम लोगों ने खुद की है, उसे पैरों-तले कुचलना बुरा मालूम होता है। राजा कितना ही सबल हो, पर न्याय का गौरव रखने के लिए कभी-कभी राजा को भी सिर झुकाना पड़ता है। मेरे लिए कोई बात नहीं, फैसला मेरे अनुकूल हो या प्रतिकूल, मेरे ऊपर इसका कोई असर नहीं पड़ता; बल्कि प्रजा पर हमारे न्याय की धाक और बैठ जाती है। गवर्नर ने मुझे इस अपराध के लिए दंड भी दिया है। वह मुझे यहाँ से हटा देना चाहते हैं।

(ग) वह जब खुश होतीं तो सूखा या बासी पकवान, सड़ा आम, फटे दूध का बदबूदार छेना या जूठन की बची हुई कड़वी तरकारी देती हुई मुझे कहतीं- बलचनवा, ऐसी अच्छी चीज तेरे बाप-दादे ने भी नहीं खाई होगी।

अथवा

वह मेरी उपजाई हुई पहली फसल थी। डेढ़ कट्ठा खेत में छः पसेरी मड़ुआ हुए थे। कितना मीठा होता है अपनी मेहनत का फल, खुद के उपजाये हुए मड़ुओं का लाल रोटी खाकर पेट चाहे भर जाए, हियाब नहीं भरेगा तुम्हारा; हाँ!

3×7=21

(3×10=30)

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर विस्तार में दीजिए :

(क) 'मृगनयनी' उपन्यास के प्रतिपाद्य का विवेचन कीजिए।

(ख) राजा मानसिंह के व्यक्तित्व के उदात्त पक्षों पर प्रकाश डालिए।

(ग) सूरदास की जीवन-दृष्टि एवं तद्युगीन समाज की जड़ता का विवेचन कीजिए।

(घ) सूरदास के चरित्र में व्याप्त मानवीय गुणों पर प्रकाश डालिए।

(ङ) 'बलचनवा' उपन्यास के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

3×18=54

(3×20=60)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

(क) लाखी कौन है?

(ख) राजा मानसिंह ने बैजनाथ को नमस्कार क्यों किया?

(ग) लेखक को 'मृगनयनी' लिखने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई?

(घ) सूरदास के अनुसार मनुष्य दु:ख क्यों भोगता है?

(ङ) बलचनवा फूल बाबू की शरण में क्यों गया? 5×1=5

(5×2=10)